विधि में कॅरिअर: सफलता का मार्ग

आलोक बंसल

अधिक से अधिक छात्र इन दिनों विधि को एक आकर्षक रोज़गार के तौर पर अपना रहे हैं. परंपरागत रूप से दुनिया भर में देशों और कंपनियों के भविष्य को दिशा प्रदान करने में वकीलों की अग्रणी भूमिका रही है. पूर्व में और वर्तमान में अधिकतर लोकप्रिय नेताओं ने अपने जीवन में कभी न कभी विधि का समावेश जरूर किया है.

कानूनी शिक्षा को विधि व्यवसाय का एक महत्वूपर्ण हिस्सा माने जाने के साथ ही संसद ने एक अधिनियम पारित किया. इस अधिनियम के तहत भारत में विधि व्यवसाय के नियमन और कानूनों की अनुपालना सुनिश्चित करने तथा देश में विधि व्यवसाय के व्यावसायिक मानदंडों को बनाये रखने के लिये बार काउंसिल ऑफ इंडिया एक सर्वोच्च नियामक संस्था है.

बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने कानूनी शिक्षा के लिये पूर्णरूपेण समर्पित विशेषीकृत विधि विश्वविद्यालयों की स्थापना और इस प्रकार भारत में विधिक व्यवसाय के अकादमिक स्तर को बढ़ाने की दिशा में के प्रयोग के लिये पहल की. यह फैसला 1985 के आस-पास हुआ और इसके बाद भारत में पहला विधि विश्वविद्यालय बंगलौर में स्थापित किया गया जिसका नाम नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटी (‘एनएलएस‘ के तौर पर लोकप्रिय) रखा गया. इन विधि विश्वविद्यालयों का मकसद कानून की पढ़ाई के लिये बहु-विषयक और एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करना था. अतः ये पहली बार था कि भारत में एलएलबी अथवा बी एल के अलावा एक विधिक डिग्री प्रदान की जाने लगी. एनएलएस ने विधि में पांच वर्षीय पाठ्यक्रम की पेशकश की जिसे सफलतापूर्वक पूरा करने पर ‘‘बीए, एलएलबी (आनर्स)‘‘ शीर्षक से एकीकृत डिग्री प्रदान की जाने लगी. इसके उपरांत अन्य विधि विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई जो विभिन्न नामों के साथ पांच वर्षीय एकीकृत विधि डिग्री की पेशकश कर रहे हैं. देश में ज्यादातर प्रमुख विश्वविद्यालय अब छात्रों को 12वीं कक्षा के उपरांत और प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेश प्रदान करते हैं.

राष्ट्रीय विधिक विश्वविद्यालयों की स्थापना से लेकर अब कानून पूरी तरह से उससे भिन्न स्वरूप में हो गया है, जो कि एक दशक पहले प्रयोग में होता है. लोगों की अब ये धारणा नहीं रही कि कानून उन लोगों के लिये होता है जो अन्य कोई पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं पाते. भारत के राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय इन दिनों ऐसे रोजगारों पेशकश करते हैं जो कि आईआईटी और आईआईएम के स्नातकों के समकक्ष होते हैं. राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त करने पर आप व्यवसाय के लिये अपेक्षित सभी कौशल अर्जित कर लेंगे और हर एक छात्र के व्यक्तित्व के अनुरूप रोजगार के विभिन्न अवसर मौजूद होते हैं. अब विधिक पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत आपके लिये काले और सफेद वस्त्रों में एक एडवोकेट के तौर पर प्रेक्टिस करना मात्र ही व्यवसाय नहीं रह गया है. कार्पोरेट कानून, बौद्धिक संपदा अधिकार, कराधान आदि भी विधि में स्नातकों के लिये आकर्षक रोजगार अवसरों के तौर पर उभरकर सामने आये हैं. कार्पोरेट घराने कानूनी सहायता प्राप्त करने के लिये विशेषीकृत वकीलों को हायर करने पर काफी ख़र्च कर रहे हैं. लॉ फर्में एनएलयू से नये विधिक स्नातकों की भर्ती के लिये 10 से 14 लाख रुपये के पैकेज की पेशकश करते हैं और किसी के अपने कॅरिअर में तरक्की के साथ-साथ स्थितियां बेहतर होती चली जाती हैं.

इन राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों तथा कॅरिअर के तौर पर विधि की बढ़ती लोकप्रियता से हर वर्ष प्रमुख विधिक प्रवेश परीक्षाओं, मुख्यतः संयुक्त विधिक प्रवेश परीक्षा (सीएलएटी) में बैठने वाले आवेदकों की संख्या में कई गुणा वृद्धि की है.

(शेष पृष्ठ 40 पर)

विधि में कॅरिअरः
(पृष्ठ 1 का शेष)

विधि में कॅरिअर के लिये कुछेक अपेक्षित व्यक्तिशः गुण इस प्रकार हैंः (क) अच्छा सम्प्रेषण कौशल (ख) त्वरित प्रतिक्रिया, उत्कृष्ट स्मरणशक्ति (ग) खुला, लचीला दिमाग (घ) अच्छी प्राधिकृत नेतृत्व गुणवत्ताएं (ड.) औचित्यपूर्ण तार्किकता (च) अच्छा श्रोता और शक्तिशाली भाषण-संबंधी कौशल (छ) आगे की सोच रखने की योग्यता (ज) सभी कानूनों, नियमों और विनियमों तथा अधिसूचनाओं की जानकारी और (झ) धैर्य, क्योंकि कुछ मामले बहुत लंबे समय तक चलते रहते हैं.

नियोक्ता कौन हैं?

राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों से भर्ती करने वाले प्रमुख नियोक्ता विधिक फर्में, कॉर्पोरेट और न्यायिक सेवाएं हैं.

- निजी विधिक फर्में और विदेशी विधिक फर्में भर्ती के लिये नियमित रूप से राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों में आते हैं. कार्पोरेट्सः आईटीसी लिमि., आईबीएम, इन्फोसिस आदि.
- **न्यायिक सेवाएं:** भारतीय न्यायिक सेवाओं में तेजी से वृद्धि हो रही है. आने वाले वर्षों में योग्य और सुशिक्षित अधिवक्ताओं की मांग में जबर्दस्त वृद्धि होगी. भारत में जजों की भी कमी है जिसे आज के विधि स्नातकों से ही भरा जायेगा.

सीएलएटी के बारे में

संयुक्त विधिक प्रवेश परीक्षा (सीएलएटी) 17 राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिये राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित एक केंद्रीयकृत परीक्षा है. परीक्षा विधि में एकीकृत स्नातकपूर्व कार्यक्रमों में प्रवेश के लिये उच्चतर माध्यमिक परीक्षा अथवा 12वीं श्रेणी के उपरांत अथवा मास्टर ऑफ लॉ एलएलएम के लिये विधि में स्नातक अर्हता के उपरांत आयोजित की जाती है. 2015 से सीएलएटी ऑनलाइन स्वरूप में आयोजित किया जा रहा है.

पात्रता

स्नातकपूर्व पाठ्यक्रमः

कुल मिलाकर कम से कम 45 प्रतिशत अंकों के साथ (अजा और अजजा उम्मीदवारों के मामले में 40 प्रतिशत) मान्यता प्राप्त बोर्ड से वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय/इंटरमीडिएट (10+2) या इसके समकक्ष प्रमाणपत्र. अपने परिणामों का इंतजार कर रहे छात्र भी परीक्षा देने के पात्र हैं.

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमः

कुल मिलाकर कम से कम 55 प्रतिशत अंकों (अजा और अजजा उम्मीदवारों के मामले में 50 प्रतिशत) के साथ मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से एलएल.बी./बी.एल डिग्री अथवा समकक्ष डिग्री. जिन उम्मीदवारों ने अर्हक डिग्री परीक्षा पूरक/कम्पार्टमेंट और पुनः अवसरों के जरिये उत्तीर्ण की है वे भी परीक्षा में उपस्थित होने के पात्र हैं. ऐसे उम्मीदवारों को प्रवेश उनके प्रवेश की तिथि को अथवा संबंधित विश्वविद्यालयों द्वारा अनुमतेय समय के भीतर 55/50 प्रतिशत अंकों के साथ अर्हक परीक्षा उत्तीर्ण करने का सबूत प्रस्तुत करने पर ही प्रदान किया जायेगा.

आवेदन-पत्र प्रस्तुतिकरण आरंभ होने की तिथिः 1 जनवरी 2016, विधिवत भरे हुए ऑनलाइन आवेदन पत्र प्रस्तुत करने के लिये अंतिम तिथि 31 मार्च 2016 (अपराह्न 11.59). सीएलएटी-2016 ऑनलाइन परीक्षा की तिथि 8 मई 2016 (अपराह्न 3.00 बजे से अपराह्न 5.00 बजे तक)

परीक्षा की पद्धतिः

यह 120 मिनटों की अवधि की ऑनलाइन परीक्षा है. पिछले वर्ष की पद्धति के आधार पर परीक्षा में 200 प्रश्न होंगे जिनके पांच खण्ड हैंः

खण्ड 1: शाब्दिक योग्यता-40 प्रश्न-प्रत्येक का 1 अंक

खण्ड 2: समस्या समाधान-20 प्रश्न-प्रत्येक का 1 अंक

खण्ड 3: विधिक अभिरुचि-50 प्रश्न-प्रत्येक का 1 अंक

खण्ड 4: रीजनिंग-40 प्रश्न-प्रत्येक का 1 अंक

खण्ड 5: सामान्य जागरूकता-50 प्रश्न-प्रत्येक का 1 अंक

परीक्षा 200 अंकों की है और प्रत्येक गलत उत्तर के लिये 0.25 दंडात्मक अंक होंगे.

परीक्षा पद्धति को विधि में कॅरिअर के लिये छात्र की बुनियादी अभिरुचि के मूल्यांकन हेतु डिजाइन किया जाता है. प्रश्न पाठ्यक्रम विषयवस्तु जैसे कि मौलिक गणित, रीजनिंग कौशल और व्याकरण पर आधारित होते हैं. विधिक अभिरुचि खण्ड को बुनियादी कानूनी ज्ञान और विधिक रीजनिंग की जांच के लिये ड़िजाइन किया जाता है.

कुछ अन्य प्रमुख विधिक परीक्षाएं हैं:

1. एआईएलईटी दिल्ली (एनएलयू दिल्ली हेतु) परीक्षा तिथिः 1 मई 2016
2. आईपी यूनिवर्सिटी, दिल्ली
3. सिम्बॉयसिस प्रवेश परीक्षा
4. जिंदल ग्लोबल स्कूल ऑफ लॉ में प्रवेश के लिये एलएसएटी

छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में उपस्थित होने के बारे में शीघ्र निर्णय कर लें और इसके लिये विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्राप्त करें.

(लेखकः निदेशक, आईएमएस लर्निंग, नई दिल्ली से हैं. ई-मेल : www.imsindia.com)